राजकीय महाविद्यालय काण्डा, बागेश्वर

हिन्दी विभाग

कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम अपेक्षित परिणाम

❖ स्नातक स्तर पर कार्यक्रम अपेक्षित परिणाम

- साहित्य मानव संवेदना की अभिव्यक्ति का प्रमुख स्रोत रहा है। कलाओं में यह सम्पूर्ण कला है। साहित्य समाज का प्रतिदर्श है। स्नातक उपाधि में इस विषय के चयन व अध्ययन से शिक्षार्थी को साहित्य के सांगोपांग महत्व का ज्ञान होता है।
- शिक्षार्थी को राष्ट्र की सर्वप्रमुख भाषा हिन्दी के अत्यन्त समृद्ध साहित्य के सम्पूर्ण स्वरूप का ज्ञान होता है।
- शिक्षार्थी को हिन्दी साहित्य की सभी प्रमुख विधाओं का ज्ञान होता है, जिससे उसमें रचनात्मकता का प्रस्फुटन एवं विकास होता है।
- स्नातक स्तर पर हिन्दी भाषा क अध्ययन विद्यार्थियों के भीतर व्यवहारिक व सामाजिक कुशलता प्रदान करेगा।
- भाषा को सशक्त बनाना एक राष्ट्र की नैतिक ज़िम्मेदारी होती है। स्नातक स्तर पर हिन्दी के अध्ययन से विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा।
- साहित्य किसी भी राष्ट्र की आंतरिक धारा होता है जो व्यक्ति कोइ नैतिक तथा संवेदनशील बनाता है। हिन्दी विषय में कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि साहित्यिक विधाओं का अध्ययन कर विद्यार्थियों का संवेदनात्मक एवं नैतिक विकास होगा।
- शिक्षार्थी को जीवन के आजीविकोपार्जन संबंधी पक्ष के रूप में हिन्दी के प्रयोजनमूलक स्वरूप व महत्व का ज्ञान एवं प्रशिक्षण होता है।
- साहित्य के अधययन में अन्य अनुशासनों के सन्दर्भ यथा सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, पर्यावरणीय आदि समाहित होते हैं। स्नातक में हिन्दी साहित्य का चयन शिक्षार्थी को समग्र रूप से शिक्षित करता है।
- शिक्षार्थी वैकल्पिक/सहायक विषय के रूप में हिन्दी भाषा के स्वरूप का ज्ञान एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करेगा।
- शिक्षार्थी स्नातक स्तर पर वैकल्पिक/सहायक विषय के रूप में हिन्दी व्याकरण का ज्ञान एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करेगा। विकल्प के रूप में यह चयन प्रतियोगी परीक्षाओं में सहायक एवं उपयोगी सिद्ध होगा ।
- शिक्षार्थी कौशल संवर्द्धन पाठ्यक्रम के रूप में हिन्दी पत्रकारिता का ज्ञान एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करेगा।

- शिक्षार्थी संघ लोक सेवा आयोग एवं प्रादेशिक लोक सेवा आयोगों के परीक्षा पाठ्यक्रम में सम्मिलित हिन्दी साहित्य की आधार व अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करता है।

❖ स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रम अपेक्षित परिणाम

➢ प्रथम सत्रार्ध

- **प्रश्न-पत्र :- प्राचीन एवं भक्तिकालीन काव्य**

1. शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के आरम्भिक काल की कविता का ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान सोदाहरण प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी चंदबरदाई, जायसी व तुलसी के कृतित्व को समझने के क्रम में महाकाव्य विधा का शिल्पगत परिचय व ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी आदिकालीन वीर काव्य का सैद्धान्तिक परिचय व ज्ञान सोदाहरण प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी निर्गुण काव्यधारा व संत साहित्य का सैद्धान्तिक परिचय व ज्ञान सोदाहरण प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी सूफी काव्यधारा, सगुण काव्यधारा तथा उसके अंतर्गत रामभक्ति तथा कृष्णभक्ति शाखा के महत्वपूर्ण काव्य व सैद्धान्तिक परिचय एवं ज्ञान सोदाहरण प्राप्त कर पाएँगे।

➢ द्वितीय सत्रार्ध

- **प्रश्न-पत्र :- कथा साहित्य**

1. शिक्षार्थी हिन्दी की कथा परम्परा का परिचय व ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी हिन्दी उपन्यास के उद्भव और विकास का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास के अध्ययन से उपन्यास विधा का शिल्पगत ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के आधार पर कहानी विधा का शिल्पगत ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी कथा-साहित्य की समीक्षा का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

➢ तृतीय सत्रार्ध

- **प्रश्न-पत्र :- रीतिकालीन काव्य एवं काव्यांग विवेचन**

1. शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के तीसरे काल रीतिकाल के विषय में ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कविताओं के आधार पर रीतिकालीन कविता की कला एवं शिल्प का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी काव्यांग के अंतर्गत रस के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी काव्यांग के अंतर्गत छंद के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी काव्यांग के अंतर्गत अलंकार के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी काव्यांग के शब्दशक्ति के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

- **द्वितीय प्रश्न-पत्र :- हिन्दी भाषा : स्वरूप**

1. शिक्षार्थी हिन्दी भाषा के विस्तृत एवं समृद्ध इतिहास व विकास का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी हिन्दी की शैलियों यथा हिन्दी, हिन्दुस्तानी व उर्दू का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे, जो भाषा के व्यावहारिक प्रयोग में उपयोग आता है।
3. शिक्षार्थी हिन्दी की उपभाषाओं एवं बोलियों का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे, जिसके आधार पर वह अपने भाषा संस्कारों को समृद्ध करने के साथ ही सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग अधिक कुशलता के साथ कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी राजभाषा के रूप में हिन्दी की संवैधानिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे, जिसकी आवश्यकता उन्हें सरकारी सेवाओं में होती है।
5. शिक्षार्थी विभिन्न व्यावहारिक व व्यावसायिक प्रयोजनों हेतु हिन्दी के मानकीकृत रूप का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी कम्पूयूटर व इंटरनेट की तकनीक में हिन्दी के प्रयोग का आरंभिक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

➢ चतुर्थ सत्रार्ध

- **प्रथम प्रश्न-पत्र :- नाटक एवं स्मारक साहित्य**

1. शिक्षार्थी नाटक की भारतीय एवं पाश्चात्य परम्पराओं का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी नाटक के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित नाटक के अध्ययन के आधार पर नाट्य समीक्षा का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

4. शिक्षार्थी को हिन्दी साहित्य में स्मारक साहित्य लेखन परम्परा का ज्ञान होगा।
5. शिक्षार्थी को स्मारक साहित्य के स्वरूप व उसकी विधाओं का ज्ञान प्राप्त होता है।
6. शिक्षार्थी को महान साहित्यकारों के जीवन से जुड़ी घटनाओं को पढ़ने से उच्च जीवन मूल्यों की शिक्षा एवं प्रेरणा प्राप्त होगी।

➢ **पंचम सत्रार्ध**

- **प्रथम प्रश्न-पत्र : द्विवेदीयुगीन एवं छायावादी काव्य**

1. शिक्षार्थी हिन्दी के द्विवेदी युग व नवजागरण काल के विषय में ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी हिन्दी कविता के छायावाद युग का ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी खड़ी बोली हिन्दी की आरम्भिक समर्थ काव्य-परम्परा का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित द्विवेदीयुगीन कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिन्दी कविता के स्वरूप, महत्व तथा शिल्प का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित छायावादयुगीन कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिन्दी कविता के स्वरूप, महत्व तथा शिल्प का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी आधुनिक कविता की समीक्षा का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

- **द्वितीय प्रश्न-पत्र :- छायावादोत्तर हिन्दी कविता**

1. शिक्षार्थी छायावादोत्तरी कविता का ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी आधुनिक हिन्दी कविता में प्रगतिवाद का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी आधुनिक हिन्दी कविता में प्रयोगवाद का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी आधुनिक हिन्दी कविता में नयी कविता का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी आधुनिक हिन्दी कविता में समकालीन कविता का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

- **कार्य परियोजना :- हिन्दी की वैज्ञानिक शब्दावली**

शिक्षार्थी इस लघुशोधात्मक अध्ययन एवं कार्य के माध्यम से हिन्दी की वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे। विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिन्दी के प्रसार के लिए यह अध्ययन आवश्यक है।

- **षष्ठम सत्रार्ध**

- **प्रथम प्रश्न-पत्र :- हिन्दी निबंध**

1. शिक्षार्थी निबंध विधा के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी हिन्दी में निबंध विधा के उद्भव और विकास का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी सामाजिक व साहित्यिक विषयों से निबंध के वैचारिक सम्बन्ध तथा अभिव्यक्ति का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी निबंध के प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित निबंधकारों के अध्ययन से विचार के क्षेत्र में मौलिक अभिव्यक्ति का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

- **द्वितीय प्रश्न-पत्र :- लोक साहित्य**

1. शिक्षार्थी साहित्य के लोकपक्ष का ऐतिहासिक तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी लोक साहित्य के स्वरूप, अध्ययन की प्रविधियों, संकलन प्रक्रिया आदि का प्रशिक्षण एवं ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी लोक संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी लोकगीतों के स्वरूप, उनके सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोतों तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी लोक नाट्य के स्वरूप, उनके सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोतों तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी लोककथाओं के स्वरूप, उनके सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोतों तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
7. शिक्षार्थी लोकगाथाओं के स्वरूप, उनके सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोतों तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
8. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित लोक साहित्य के अध्ययन द्वारा लोक का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

- **कार्य परियोजना : साहित्यिक विचारधाराओं का अध्ययन**

शिक्षार्थी इस लघु शोधात्मक अध्ययन एवं कार्य के माध्यम से हिन्दी की साहित्यिक विचारधाराओं का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे। हिन्दी साहित्य में उच्चस्तरीय शोध के लिए यह पूर्व-अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

❖ परास्नातक स्तर पर कार्यक्रम अपेक्षित परिणाम

- साहित्य ऐसा स्रोत है, जो समाज व उसकी दशा, गति, दिशा, उसके उद्वेलन आदि को सजीवता से चित्रित करता है। शिक्षार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्ययन करते हुए अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक गत्यात्मकता की मूल्यपरक पहचान प्राप्त कर पाएँगे।
- हिन्दी साहित्य भारत के इतिहासक्रम में तत्कालीन सामाजिक, समावेशीकरण/समांगीकरण राज व्यवस्था, धर्म, भक्ति के विभिन्न पंथ सूफी, संत, नाथ, सिद्ध, निर्गुण-सगुण, रीति, राज्याश्रयी श्रृंगाराभिव्यक्ति आदि से लेकर आधुनिक काल की विभिन्न विचारधाराओं /आंदोलनों और अद्यतन उत्तरआधुनिक वैचारिक परिदृश्य तक एक सुदीर्घ-सुलिखित दस्तावेज़ की तरह है। शिक्षार्थी परास्नातक स्तर परहिन्दी साहित्य के अध्ययन से साहित्य के साथ-साथ इस लम्बी परम्परा का भी ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
- शिक्षार्थी साहित्य के पारंपरिक सांस्कृतिक आग्रहों के प्रति, नैतिक मूल्यों के प्रति सचेत होने के साथ-साथ इस महान भारतीय परम्परा के अग्रगामी आधुनिक स्वरूप का भी ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
- भौतिकवादी जगत में निरन्तर बदलते जीवन मूल्यों से उपजी आस्था-अनास्था, आशा-निराशा, संगति-विसंगति आदि में जीते मानव समाज को सही दिशा निर्देशन साहित्य ही करता है। शिक्षार्थी परास्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्ययन कर सही व सच्चे अर्थ में समुन्नत जीवनमूल्यों का धारक मनुष्य बन पाएँगे।
- शिक्षार्थी हिन्दी अनुवाद तथा हिन्दी पत्रकारिता जैसे रोजगार क्षेत्रों में कार्य करने हेतु आधारभूत ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
- शिक्षार्थी संघ लोक सेवा आयोग तथा राज्य लोक सेवा आयोगों की प्रतियोगी परीक्षाओं में चयन हेतु विशिष्ट विषय के रूप में हिन्दी साहित्य का समग्र ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

➢ प्रथम सत्रार्ध

- **प्रथम प्रश्न-पत्र :- आदिकालीन एवं निर्गुण काव्य**

1. शिक्षार्थी आदिकाल के कवि अब्दुल रहमान की कृति संदेस रासक के अध्ययन से हिन्दी भाषा के आदिकालीन तथा अपभ्रंश के परवर्ती रूप अवहट्ट का परिचय तथा ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी आदिकाल के प्रसिद्ध महाकाव्य पृथ्वीराज रासो के अध्ययन से वीरकाव्य की परम्परा तथा आदिकालीन हिन्दी के राजस्थानी प्रभाव वाले अवहट्ट रूप का परिचय तथा ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

3. संस्कृत में जयदेव का गीतकाव्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हिन्दी में यह महत्व विद्यापति को प्राप्त है। शिक्षार्थी विद्यापति के पदों के अध्ययन से गीतकाव्य की समृद्ध भारतीय परम्परा तथा मैथिली भाषा का परिचय तथा ज्ञान कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी कबीर की वाणी का अध्ययन करते हुए हिन्दी भक्तिकाव्य में निर्गुण के स्वरूप तथा हिन्दी की संतकाव्य परम्परा का निकट परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी मलिक मोहम्मद जायसी के महाकाव्य पद्मावत का अध्ययन करते हुए हिन्दी भक्तिकाव्य में प्रेमाश्रयी सूफी काव्यधारा का ऐतिहासक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
6. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी में सामाजिक चेतना, राष्ट्रप्रेम तथा उच्च नैतिक मूल्यों का विकास होगा।

- **द्वितीय प्रश्न-पत्र :- सगुण काव्य एवं रीतिकालीन काव्य**

1. शिक्षार्थी मध्यकालीन सगुण भक्तिधारा व उसकी शाखाओं से रीतिकालीन काव्य तक की विभिन्न धाराओं का ऐतिहासिक परिचय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी सूरदास की रचनाओं का अध्ययन कर सगुण धारा की कृष्णभक्ति शाखा का आलोचनात्मक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करेंगे तथा सूरदास के काव्य में उपस्थित प्रकृति और जीवन के लोक स्वरूप का साक्षात्कार कर पर्यावरण की सुन्दरता व उसके संरक्षण की अनिवार्यता के महत्व को समझेंगे।
3. शिक्षार्थी तुलसीदास के काव्य का अध्ययन कर सगुण धारा की रामभक्ति शाखा का आलोचनात्मक व सैद्धान्तिक ज्ञान तथा विभिन्न धार्मिक-सामाजिक मान्यताओं व मतों के बीच समन्वय की दृष्टि प्राप्त करेंगे। यह समन्वयवादी दृष्टि शिक्षार्थी के निजी जीवन में विभिन्न क्षेत्रों में सफलता हेतु सहायक होगी।
4. शिक्षार्थी केशवदास के काव्य के अध्ययन से भारतीय काव्यशास्त्र का परम्परागत ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी बिहारी के काव्य के अध्ययन से कविता की भाषा में मितकथन व अलंकारों के सटीक प्रयोग का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे, जिससे उनमें काव्यात्मक अभिरुचि का विकास एवं विस्तार होगा।
6. शिक्षार्थी घनानंद की कविता के अध्ययन से सामाजिक रूढियों के बीच प्रेम की विलक्षण अनुभूति से परिचित होंगे, जिससे वह तत्कालीन से लेकर समकालीन समाज तक की सम्बन्ध आधारित जटिल संरचना के ज्ञान के साथ ही विवेचन की मनोवैज्ञानिक समझ भी प्राप्त कर पाएँगे।

- **तृतीय प्रश्न-पत्र :- भारतीय काव्यशास्त्र**

1. शिक्षार्थी भारतीय काव्यशास्त्र की अत्यन्त समृद्ध परम्परा का ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी काव्य लक्षणों, काव्य हेतु तथा काव्य प्रयोजनों के अध्ययन से कविता के शिल्प और विषयवस्तु से लेकर उसके वृहद् सामाजिक उद्देश्यों तक आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. विभिन्न काव्य तत्वों के संधान के आधार पर परम्परा में आचार्यों ने काव्य विवेचन किया, फलस्वरूप रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति एवं औचित्य सम्प्रदाय अस्तित्व में आए, जो पश्चिमी काव्य चिंतन में इस विस्तार के साथ नहीं मिलते। शिक्षार्थी इन काव्य सम्प्रदायों के अध्ययन से भारतीय परम्परा में काव्य चिंतन की विलक्षणता, उदात्तता और सैद्धान्तिक विस्तार का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी हिन्दी आलोचना के उद्भव व विकास का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी हिन्दी के सामान्य आलोचना सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित आलोचकों के कृतित्व के अध्ययन से हिन्दी आलोचना की विशिष्ट विचारधाराओं का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
7. शिक्षार्थी साहित्यिक कृतियों के आलोचन का व्यावहारिक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

- **चतुर्थ प्रश्न-पत्र :- हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल तक)**

1. शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा, प्रविधि, काल-विभाजन पद्धति, नामकरण की समस्या व औचित्य के कारणों का ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों तथा आदिकालीन हिन्दी साहित्य के अध्ययन से जैन साहित्य, बौद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, वीरकाव्य-रासो साहित्य आदि का सैद्धान्तिक ज्ञान और चंदबरदाई, अब्दुल रहमान, जगनिक, स्वयंभू, धनपाल, नरपति नाल्ह, विद्यापति आदि महत्वपूर्ण कवियों के कृतित्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) के प्रमुख कवियों का ऐतिहासिक परिचय तथा प्रमुख काव्यधाराओं एवं प्रवृत्तियों का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का परिचय एवं प्रमुख प्रवृत्तियों का सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

5. शिक्षार्थी रीतिकालीन कवि-आचार्यों द्वारा रचित लक्षण ग्रंथों की परम्परा का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी रीतिकाल की काव्यधाराओं यथा रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध व रीतिमुक्त तथा उनके प्रतिनिधि कवियों का ऐतिहासिक परिचय एवं उनकी कविता के चमत्कारपूर्ण शिल्पगत वैशिष्ट्य का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

- **द्वितीय सत्रार्ध**

- **प्रथम प्रश्न-पत्र :- आधुनिक हिन्दी काव्य (छायावाद तक)**

1. शिक्षार्थी राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन एवं आधुनिक कविता के आरम्भ का रचनात्मक परिचय व ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी हिन्दी नवजागरण में खड़ी बोली हिन्दी में काव्यरचना के सशक्त आरम्भ के साक्ष्य प्राप्त कर पाएँगे। मैथिलीशरण गुप्त कृत साकेत की विषयवस्तु उसे हिन्दी कविता में स्त्री के मूक संघर्षों व बलिदानों के चित्रण का महत्वपूर्ण अभिलेख बनाती है, शिक्षार्थी इस पुस्तक के अध्ययन से हिन्दी में स्त्री विमर्श के आरंभिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कवियों जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत एवं महादेवी वर्मा और उनकी कविताओं के अध्ययन से छायावाद युग का ऐतिहासिक व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी छायावादी कविता के अध्ययन से प्रकृति, प्रेम, सौन्दर्य, भारत की गहन भारतीय परम्परा तथा विचार की नवीन आधुनिक सरणियों /पद्धतियों का रचनात्मक एवं सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

- **द्वितीय प्रश्न-पत्र :- पाश्चात्य काव्यशास्त्र**

1. शिक्षार्थी साहित्यालोचन की पश्चिमी परम्परा का विस्तृत ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी प्राचीन यूनानी विचारक प्लेटो, अरस्तू तथा लोंजाइनस की काव्य मूल्यांकन सम्बन्धी मान्यताओं और स्थापनाओं यथा काव्य-सत्य, अनुकरण व विरेचन, त्रासदी विवेचन, उदात्त की अवधारणा आदि का ऐतिहासिक तथा सैद्धान्तिक परिचय प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी अंग्रेज़ी के महत्वपूर्ण साहित्यालोचक मैथ्यू आर्नल्ड, क्रोचे, आई ए रिचर्ड्स और टी. एस. इलियट के समालोचन सिद्धान्तों का ऐतिहासिक परिचय व ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

4. शिक्षार्थी अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग्रेज़ी कवि वर्ड्सवर्थ के काव्यभाषा सिद्धान्त और कॉलरिज के कल्पना सिद्धान्त के अध्ययन से पश्चिम के प्रसिद्ध साहित्यान्दोलन स्वच्छंदतावाद का ऐतिहासिक परिचय और सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी पश्चिमी साहित्य और संस्कृति की महत्वपूर्ण विचारधाओं यथा मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, संरचनावाद और उत्तरआधुनिकता का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित विचारकों व उनके सिद्धान्तों के अध्ययन से आलोचना का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

- **तृतीय प्रश्न-पत्र :- हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)**

1. शिक्षार्थी 1857 की क्रांति तथा हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी आधुनिक काल के राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिदृश्य का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी आधुनिक काल में अस्तित्व में आए साहित्यिक आंदोलनों अथवा विशिष्ट धाराओं यथा छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि का सैद्धान्तिक ज्ञान तथा नवीन रचना-दृष्टि के आलोक में उनके प्रमुख रचनाकारों का परिचय प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी हिन्दी में गद्य लेखन के उद्भव-विकास तथा गद्य की प्रमुख विधाओं यथा नाटक, कहानी, उपन्यास और निबंध का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी कथेतर गद्य के अन्तर्गत स्मारक साहित्य और उसकी विधाओं यथा संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत, फीचर, डायरी, रिपोर्ताज आदि का परिचय व ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

- **चतुर्थ प्रश्न-पत्र :- हिन्दी कथा एवं नाटक साहित्य**

1. शिक्षार्थी हिन्दी उपन्यास, कहानी तथा नाटक के उद्भव-विकास तथा महत्व का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

2. शिक्षार्थी गोदान के अध्ययन से भारतीय समाज की राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना का अंतरंग साक्षात्कार करते हुए बदल रही जीवन स्थितियों और नए संकटों-समस्याओं को समझने की वैचारिक पद्धति का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से हिन्दी कहानी के विकासक्रम, उनके बहुवर्णी सामाजिक कथ्य, प्रमुख कहानी आंदोलनों तथा बदलते शिल्प का परिचय व ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित नाटक स्कंदगुप्त तथा लहरों के राजहंस के अध्ययन से हिन्दी नाट्यलेखन के विकास, भारतीय व पश्चिमी परम्परा में उसके शिल्पगत रचाव, नाटक के ऐतिहासिक-सामाजिक अभिप्रायों, प्रकारों तथा रंगमंच विधा का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी कथा साहित्य तथा नाटक की समीक्षा का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

- तृतीय सत्रार्ध

- **नवम प्रश्न-पत्र :- आधुनिक हिन्दी काव्य (छायावादोत्तर)**

1. शिक्षार्थी छायावादोत्तर हिन्दी कविता और उसकी विभिन्न काव्यधाराओं यथा प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता आदि का रचनात्मक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी दिनकर के महाकाव्य उर्वशी के अध्ययन से भारतीय दर्शन की परम्परा से परिचित होंगे तथा आधुनिक संसार में उसकी पुनर्व्याख्या का संधान करेंगे, जिससे उन्हें भेदबुद्धि यथा पाप-पुण्य, स्वर्ग-नर्क, ऊँच-नीच आदि से ऊपर उठकर संसार को समझने की चेतना, प्रेरणा व ज्ञान प्राप्त होगा।
3. शिक्षार्थी नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताओं के अध्ययन से प्रगतिशील हिन्दी कविता के स्रोत-सिद्धान्तों का ज्ञान सोदाहरण प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, केदारनाथ सिंह, लीलाधर जगूड़ी, अशोक वाजपेयी आदि की कविताओं के अध्ययन से प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता आदि का रचनात्मक व सैद्धान्तिक ज्ञान सोदाहरण प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी छायावादोत्तर काल की हिन्दी कविता की समीक्षा का रचनात्मक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

- **दशम प्रश्न-पत्र :- भाषा विज्ञान**

1. भाषा-विज्ञान भाषा एवं साहित्य ही नहीं, अभिव्यक्तियों के सन्दर्भ में समाज को समझने की पद्धति के रूप में विकसित होने वाला विषय भी है। अत: इस पाठ्यक्रम से शिक्षार्थी भाषा विज्ञान के अर्थ, स्वरूप, भाषा व्यवस्था, भाषा व्यवहार और उसके महत्व का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी भाषा प्रयोगशालाओं में उच्चस्तरीय अध्ययन व शोध हेतु आधार योग्यता व ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी भाषा विज्ञान की प्रमुख अध्ययन-शाखाओं यथा स्वन, स्वनिम, रूप, रूपिम, वाक्य, अर्थ आदि का सैद्धान्तिक व तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी भाषा की सामाजिक संरचनाओं तथा भाषा के स्वरूप के आधार पर सामाजिक अभिव्यक्ति के अध्ययन का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी साहित्यिक कृतियों के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

- **एकादश प्रश्न-पत्र :- निबंध एवं स्मारक साहित्य**

1. शिक्षार्थी निबंध विधा के स्वरूप, प्रकार और महत्व का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी हिन्दी में निबंध विधा के उद्भव एवं विकास का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित निबंधों के अध्ययन से हिन्दी के प्रमुख निबंधकारों का परिचय, निबंध की शैलियों तथा विधा का वैचारिक व रचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी स्मारक साहित्य के स्वरूप, उसकी विभिन्न विधाओं तथा महत्व का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी निबंध तथा स्मारक साहित्य की समीक्षा का ज्ञान तथा प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

- **द्वादश प्रश्न-पत्र :- हिन्दी भाषा**

1. शिक्षार्थी भारत की प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक आर्यभाषाओं का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

2. शिक्षार्थी हिन्दी के भौगोलिक विस्तार, उपभाषाओं और बोलियों के अत्यन्त समृद्ध संसार का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी हिन्दी की भाषिक संरचना का विस्तृत रचनात्मक परिचय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी हिन्दी भाषा के विविध रूपों, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति एवं हिन्दी के वैश्विक महत्व का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी नए डिजिटल संसार में कम्प्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग की प्रविधियों, तकनीक और भाषा शिक्षण का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी रोजगार अथवा आजीविका के क्षेत्र में हिन्दी भाषा के व्यवहार का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

- **चतुर्थ सत्रार्ध**

- **त्रयोदश प्रश्न-पत्र :- (क) कुमाउनी साहित्य**

1. भाषा और साहित्य की नयी उत्तरसंरचनावादी पद्धति में लोक साहित्य तथा स्थानीय भाषाओं व उनके साहित्य के अध्ययन का महत्व बढ़ा है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से शिक्षार्थी कुमाउनी के लोक तथा तत्सम साहित्य का रचनात्मक परिचय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम के खंड(क) में सम्मिलित तीन पुस्तकों के अध्ययन से कुमाऊँ के लोक साहित्य के विविध रूपों का रचनात्मक परिचय एवं ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक पछ्याण के अध्ययन से कुमाउनी कविता का रचनात्मक-शिल्पगत परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक मन्याडर के अध्ययन से से कुमाउनी कहानी का रचनात्मक-शिल्पगत परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक मन्खि के अध्ययन से कुमाउनी निबंध का रचनात्मक-शिल्पगत परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

- **(ख) उत्तराखण्ड के हिन्दी कवि**

1. आधुनिक हिन्दी कविता परम्परा में उत्तराखंड राज्य के कवियों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षार्थी इस परम्परा और उसमें उत्तराखंड कवियों के महत्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त कर पाएँगे।
2. गुमानी ने भारतेंदु युग से पूर्व काव्य में खड़ी बोली का प्रयोग किया था। उनकी कविता तत्कालीन अंग्रेजी/कम्पनी राज और सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों के सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। शिक्षार्थी खड़ीबोली हिन्दी के प्रथम कवि गुमानी के कृतित्व का ऐतिहासिक-रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. चन्द्रकुंवर बर्त्वाल छायावाद और प्रगतिवाद के संधिकाल के प्रमुख एवं महत्वपूर्ण कवि हैं। शिक्षार्थी उनके कृतित्व का रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. लीलाधर जगूड़ी साठोत्तरी हिन्दी कविता के प्रमुख कवि हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बीस वर्ष पश्चात मोहभंग और अवसाद से लड़ रहे आक्रोशित देश और समाज का स्वर उनकी कविता का आरंभिक स्वर है। शिक्षार्थी उनके कृतित्व का रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. वीरेन डंगवाल एवं मंगलेश डबराल समकालीन हिन्दी कविता में अस्सी के दशक के दो सबसे महत्वपूर्ण कवि हैं। वे हिन्दी कविता की प्रगतिशील परम्परा के नए संवाहक है, जिनकी अभिव्यक्ति जनसाधारण की समस्याओं और संघर्षों से जुड़ी है। शिक्षार्थी उनके कृतित्व का रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
6. हरीशचन्द्र पांडे समकालीन हिन्दी कविता में नब्बे के दशक के प्रमुख कवि हैं। देश में उदारवाद, भूमंडलीकरण और विभिन्न सामाजिक परिवर्तनों के बीच बदलते हुए जीवन और समाज के प्रसंग उनकी कविता का विषय हैं। शिक्षार्थी उनके कृतित्व का रचनात्मक परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
7. शिक्षार्थी समकालीन हिन्दी कविता की समीक्षा का रचनात्मक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

- **(ग) उत्तराखण्ड के हिन्दी कथाकार**

1. हिन्दी के प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य में उत्तराखंड राज्य के कथाकारों का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान व स्थान है। शिक्षार्थी इस परम्परा और उसमें उत्तराखंड के कथाकारों के समग्र योगदान और महत्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी हिन्दी के उपन्यास साहित्य में उत्तराखंड के उपन्यासकारों के कृतित्व का परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

3. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास कसप के अध्ययन से हिन्दी साहित्य में विकसित हो रहे नवीन उत्तरआधुनिक कथ्य (स्थानीय-आंचलिक एवं मुक्त-ग्लोबल) एवं शिल्प का परिचय तथा उसका सैद्धान्तिक आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास गोबर गणेश के अध्ययन से उत्तराखंड के कुमाउनी अंचल के लोक जीवन का परिचय तथा बदलते जीवनमूल्यों व सामाजिक संरचनाओं का आलोचनात्मक प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से हिन्दी कहानी तथा उसके प्रमुख आंदोलनों अथवा प्रवृत्तियों (मनोवैज्ञानिक कहानी, नयी कहानी, प्रगतिशील कहानी, अकहानी, आंचलिक अकहानी आदि) में उत्तराखंड के कहानीकारों के महत्वपूर्ण रचनात्मक योगदान का परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी कथा साहित्य की समीक्षा का ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

- **चतुर्दश प्रश्न-पत्र :- (क) लोक साहित्य**

1. किसी भी समाज और राष्ट्र की एक मूल लोक परम्परा होती है, जिससे उस राष्ट्र और समाज के समग्र सामाजिक चरित्र का निर्माण होता है। वैश्विक स्तर पर लोक साहित्य के अध्ययन एवं शोध को महत्वपूर्ण माना गया है तथा विश्वविद्यालयों में इसके पृथक विभाग स्थापित किए गए हैं। लोक साहित्य के अध्ययन से शिक्षार्थी इस मूल लोक परम्परा के अर्थ, स्वरूप और महत्व का परिचय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी लोक संस्कृति और लोक साहित्य के विविध सैद्धान्तिक पक्षों का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी अभिजात साहित्य और लोक साहित्य के अंतर्सम्बन्धों का परिचय व ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी लोक साहित्य की अध्ययन प्रक्रिया(संकलन तथा पाठ निर्धारण) का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी लोक साहित्य के विविध रूपों का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी लोक साहित्य के शोध का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

- **(ख) भारतीय साहित्य**

1. शिक्षार्थी भारतीयता की मूल भावना, भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति तथा समाजशास्त्र से परिचित हो पाएँगे।
2. शिक्षार्थी अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य के हिन्दी अनुवाद और अध्ययन की समस्याओं से परिचित हो पाएँगे।

3. शिक्षार्थी भारतीय साहित्य के समग्र स्वरूप और महत्व का परिचय व ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी भारत के दक्षिणी भाषा वर्ग, पूर्वी भाषा वर्ग तथा पश्चिमोत्तर भाषा वर्ग के साहित्य का सामान्य परिचय व ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तकों के अध्ययन से भारतीय साहित्य का रचनात्मक परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी भारतीय साहित्य के अध्ययन से जनसाधारण के स्तर पर राष्ट्र की एकता, सम्पूर्णता, विराटता व अखंडता का साक्षात्कार कर पाएँगे।
7. शिक्षार्थी में राष्ट्रगौरव और राष्ट्रप्रेम की भावना का विकास हो पाएगा।

- **पंचदश प्रश्न-पत्र :- विशिष्ट अध्ययन - (क) प्रेमचंद**

1. प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माताओं में अग्रणी हैं। उनके उपन्यासों और कहानियों ने हिन्दी में कथा साहित्य को एक स्थायी एवं सशक्त आधार प्रदान किया है। इस पाठ्यकम के अध्ययन से शिक्षार्थी हिन्दी कथा साहित्य की परम्परा और उसमें प्रेमचंद के योगदान एवं महत्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त कर पाएँगे।
2. रंगभूमि उपन्यास स्वतंत्रतापूर्व के भारत की बदल रही राजनीतिक-आर्थिक स्थितियों और सामाजिक जीवनमूल्यों के बीच सम्बन्धों की कथा कहता है। अत्यन्त वंचित और विपन्न अंधे भिखारी को नायक बनाने वाले इस उपन्यास से अध्ययन शिक्षार्थी उन आर्थिक दिशाओं और सामाजिक स्थितियों का परिचय और ज्ञान प्राप्त करता है, जिनसे स्वतंत्रता पश्चात देश का सामना होना था।
3. शिक्षार्थी प्रेमचंद के उपन्यासों के शिल्प का परिचय व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी कुछ विचार नामक संग्रह में संकलित प्रेमचंद के निबंधों के अध्ययन से उनके राजनीति, आर्थिक और सामाजिक विचारों का परिचय और ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. प्रेमचंद जन साधारण के जीवन के कहानीकार हैं। शिक्षार्थी प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानियों के अध्ययन से उनकी अंन्तर्वस्तु और शिल्प का परिचय प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी प्रेमचंद के साहित्य पर विशेषज्ञता प्राप्त कर पाएँगे।, जो परवर्ती उच्चस्तरीय शोधादि कार्यों में सहायक होगी।

- **(ख) सूरदास**

1. शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्वान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी भारतीय दर्शन में ईश्वर के स्वरूप पर हुई मीमांसा का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी भारतीय अध्यात्म एवं भक्ति में ज्ञानयोग की निर्गुणधारा और प्रेम माधुर्य की सगुणोपासना के विमर्श का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी लोक और प्रकृति के कार्य-व्यवहार का रचनात्मक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी ईश्वर की लौकिकता और उससे सम्भव हुई संसार और समाज की शुभ्रता का रचनात्मक परिचय तथा सैद्वान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी उच्च जीवन मूल्यों तथा नैतिकता का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

- **(ग) कबीरदास**

1. विश्व की प्राचीन कविता परम्परा में भारत की भक्तिकालीन निर्गुण धारा के कवि कबीर का महत्वपूर्ण स्थान है। विश्व भर में उन पर शोधकार्य हुए हैं। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से शिक्षार्थी कबीर की कविता एवं दर्शन का रचनात्मक परिचय तथा सैद्वान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी कबीर के अध्ययन से भक्ति आंदोलन, संत परम्परा तथा निर्गुण काव्यधारा का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी कबीर के अध्ययन से मध्यकालीन भारतीय समाज तथा उसमें उपस्थित जाति-धर्म, अज्ञान, अंधविश्वास आदि के विरुद्ध प्रतिरोध का रचनात्मक परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी कविता के दार्शनिक पक्ष का परिचय व सैद्वान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी कविता के सामाजिक पक्ष का परिचय व सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी साहित्य की समग्र आध्यात्मिक एवं सामाजिक समीक्षा का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

- **(घ) हिन्दी पत्रकारिता**

1. पत्रकारिता रोज़गार का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसका विस्तार बढ़ता जा रहा है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से शिक्षार्थी पत्रकारिता का मूलभूत ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी विश्व तथा हिन्दी पत्रकारिता का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी हिन्दी में पत्रकारिता के मूल तत्वों तथा प्रकारों का तकनीकी ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी समाचार-संकलन तथा सम्पादन कला के समस्त पक्षों का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी पत्रकारिता से सम्बन्धित लेखन यथा सम्पादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, खोजी समाचार, अनुवर्तन, दृश्य सामग्री आदि का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।
6. शिक्षार्थी इलेक्ट्रानिक मीडिया तथा मुद्रण कला का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
7. शिक्षार्थी भारतीय संविधान, प्रेस क़ानून तथा पत्रकारिता की आचार संहिता का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
8. समग्रता में शिक्षार्थी पत्रकार बनने की प्रेरणा, आधारभूत ज्ञान तथा प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

- **(ड.) अनुवाद : सिद्धांत एवं प्रयोग**

1. अनुवाद दो भाषाओं के बीच कार्य-व्यवहार को सुगम बनाता है। शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से अनुवाद प्रक्रिया का समग्र परिचय तथा सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी अनुवाद के स्वरूप, विभिन्न क्षेत्रों तथा सीमाओं का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी अनुवाद प्रकिया के विभिन्न चरण और प्रविधि यथा विश्लेषण, अर्थान्तरण, पुनर्गठन, सम्प्रेषण आदि का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी समतुल्यता के सिद्धान्त का परिचय तथा अनुवाद के विभिन्न प्रकारों/क्षेत्रों यथा साहित्यिक, कार्यालयी, मानविकी, संचार माध्यमों, वैज्ञानिक एवं तकनीकी इत्यादि का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी अनुवाद की समस्याओं का विस्तृत परिचय प्राप्त करते हुए अनुवाद का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

6. नयी वैश्विक परिस्थितियों एवं भूमंडलीकृत संसार में संचार, संवाद एवं सम्प्रेषण के सरकारी और गैर-सरकरी क्षेत्रों में रोजगार के नए और समृद्ध अवसर उपस्थित हुए हैं। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से शिक्षार्थी समग्रता में इन अवसरों का लाभ उठाने की मूलभूत योग्यता और विशेषज्ञता अर्जित कर पाएँगे।

- **मौखिकी**

1. शिक्षार्थी समस्त पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी पुस्तकों द्वारा प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक रूप में अभिव्यक्त करने का प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी विषय का अध्ययन करते हुए आत्मसात किए गए ज्ञान की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी विषय को लेकर अपनी मौलिक दृष्टि की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए साक्षात्कार का अभ्यास व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।

- **लघुशोध प्रबंध**

1. शिक्षार्थी शोध के अर्थ, स्वरूप और महत्व का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।
2. शिक्षार्थी भाषा और साहित्य की शोध प्रविधि का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।
3. शिक्षार्थी शोध प्रक्रिया का व्यावहारिक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।
4. शिक्षार्थी शोध प्रबंध के लेखन का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त कर पाएँगे।
5. शिक्षार्थी शोध के अकादमिक तथा सामाजिक उद्देश्य तथा महत्व का परिचय प्राप्त कर पाएँगे।

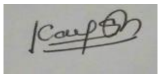

कैलाश
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)
रा. महा. काण्डा, बागेश्वर